राज
कॉमिक्स
संख्या 0222
बहरी मौत
सुपरकमांडो
ध्रुव
RAJ COMICS
राज
कॉमिक्स
BY MANOJ GUPTA
संस्थापक
श्रद्धांजलि
वर्ष 2021
Vijay Kadam
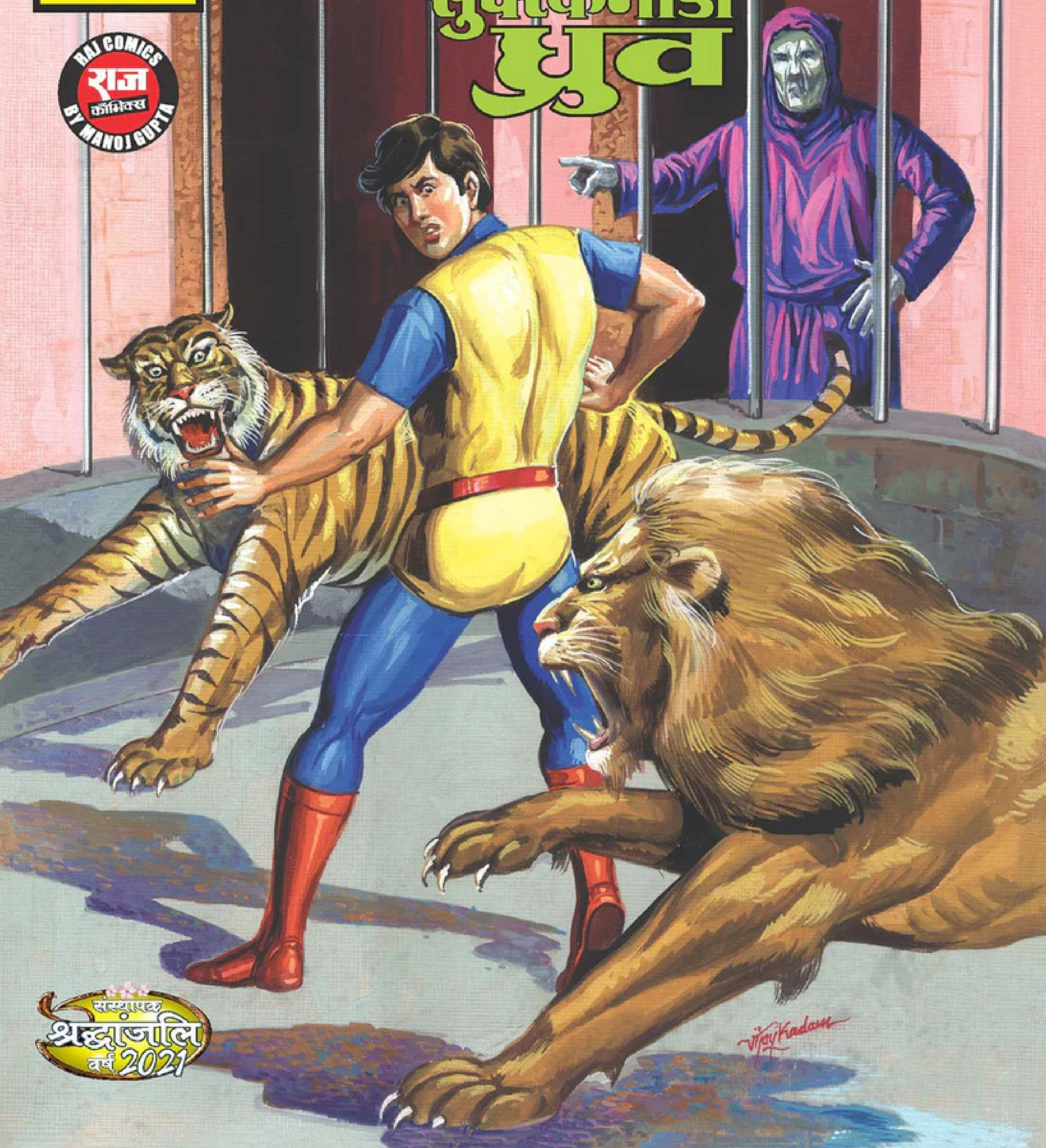
सुपर कमांडो ध्रुव

बहरी मौत

कथा एवं चित्र : अनुपम सिन्हा

संपादक : मनीष चन्द्र गुप्त

जहां से आजतक कोई वापस नहीं लौटा–

जैकी, यह क्या है? यह आदमी यहां पर शेरों के साथ क्या कर रहा है?

प...पता नहीं। लेकिन मुझे तो डर लग रहा है। मेरे ख्याल से तो यहां से वापस भाग चलो।

लेकिन जैकी की कांपती उंगली ट्रिगर पर दब चुकी थी–
धांय

पर निशाना कच्चा था। गोली ने आदमी के बजाय अलाव के परखच्चे उड़ा दिए–
लेकिन आदमी तो आदमी, जानवर तक अपनी जगह से नहीं हिले।

तब तक जब तक लबादेधारी के हाथ में पकड़ा हंटर हवा में नहीं हिला–
चटाक
अगले ही पल- मूर्ति की तरह बैठे शेर और बबर शेरों में बिजली की सी फुर्ती आ गई–

अब जैकी चाहकर भी नहीं भाग सकता था–
क्योंकि भागने के सभी रास्तों पर मौत खड़ी थी–

लेकिन समद ने अब तक अपने होशोहवास कायम रखे थे–
उसने अपनी रायफल तानी।
और ट्रिगर दब पाने से पहले ही, रायफल हवा में उछल गई–
सटाक

साथ ही साथ-लबादे के अंदर से एक फुसफुसाती आवाज उभरी–

तुम दोनों बहुत खुशकिस्मत हो...

..क्योंकि तुम दोनों की बेकार जिंदगी, एक बहुत *महान* प्रयोग के काम आएगी।

तबाका!

अगले ही क्षण—एक भयंकर गुरिल्ले ने झाड़ियों से निकलकर, दोनों शिकारियों को हवा में उठा लिया–

...और झाड़ियों के पीछे ओझल हो गया।

कुछ समय बाद जब थर-थर कांपते दोनों शिकारी वापस आए, तो उनके कपड़े बदल चुके थे–

कपड़े देखते ही-हिंसक जानवरों के चेहरों पर एकदम से क्रूरता उभर आई–

अब उनके रहने की जगह पर हड्डियों के ढेर और गिद्धों के अलावा और कुछ नहीं बचा था—

चीं चिं चिं चिंचिं! चां चां चिं चीं!

ओह!

☆: पढ़िए 'मुझे मौत चाहिए'

कमाल है, ध्रुव! यानि कि तुम पशु-पक्षियों से वाकई बात कर सकते हो!!
हर पशु-पक्षी की बोली मैं नहीं समझ पाता हूं।..
..लेकिन अधिकतर पशु-पक्षियों से मैं बातें कर सकता हूं। क्योंकि मैं इन सब के साथ ही पला बढ़ा हूं।

अच्छा तो बताओ कि यह चिड़िया क्या कह रही थी?
यह कह रही थी कि शेर आ गए हैं।
ओह! यानि चिड़ियाघर में कोई नया शेर आया है।

नहीं, रमजान! चिड़ियां शेरों की प्रवृत्ति पहचानती हैं।
यह जिन शेरों की बात कर रही थी, वे शिकार पर निकले जंगली शेर हैं।
लो! तुमने शिकार की बात की, और यहां लंच का सायरन बजा। आओ, आज यहीं लंच करो।

चलो, भाई! आज फ्री का खाना ही सही।

इसी वक्त-राजनगर के पूर्वी हाई-वे पर एक वैन तेजी से राजनगर की तरफ बढ़ रही थी-

तभी-ड्राइवर ने कुछ देखा-
ओह! यह देहाती तो बीमार लगता है।
शायद अस्पताल जाना चाहता है।

कहो, भाई! कहां जाना...? ज...ज...।
ड्राइवर की बात पूरी होने से पहले ही देहाती ने चादर उतार फेंकी।

और ड्राइवर के कुछ समझ पाने के पहले ही, उसकी गर्दन एक शिकंजे में कस गई—

कुछ मिनटों बाद- ड्राइवर का निष्प्राण शरीर हवा में झूल रहा था—
हाहाहा! तबाका, तेरा तो खाने का इंतजाम हो गया।...
...और मेरा गाड़ी का।

वैन एक बार फिर तेजी से राजनगर की तरफ बढ़ने लगी-
अब सबसे पहले मुझे एक गुप्त जगह से अपना कुछ सामान लेना है।
...और उसके बाद, हम अपना खेल शुरू करेंगे।

इसी वक्त- ध्रुव इस गुत्थी को सुलझाने की कोशिश कर रहा था —
'शेर आ गए हैं' का क्या अर्थ हो सकता है?...
क्या बात है, ध्रुव?
तुम इतने परेशान क्यों हो?

कुछ नहीं, पापा! बस यूं ही।
बिना परेशान हुए इनका खाना कहां पचता है, पापा?
अरे, श्वेता, तू कहां से आ रही है?
और तूने यह क्या पहन रखा है?

मैं 'डिपार्टमेंटल- स्टोर' से आ रही हूं, पापा! और यह ड्रेस आजकल का लेटेस्ट फैशन है। इसको हर स्टोर वाले 'ध्रुव-क्रेज' कह कर बेच रहे हैं।...
...मैंने तो इसको सिर्फ भइया का दिल रखने को पहना है।...

..लेकिन पूरे शहर में तो इसका बुखार चढ़ा है, बुखार। इस शहर के लोग बड़े बेवकूफ हैं। हैं न, मि॰ ध्रुव?
तारीफ के लिए धन्यवाद, मिस श्वेता!
अब तक आपकी जुबान थोड़ी थक गई होगी।
उसको जरा आराम देंगी?

हुंह! सच्चाई तो कोई सुनना ही नहीं चाहता।
मैं तो चली इस कूड़ा ड्रेस को वापस करने।
जो पैसे वापस मिलें, उससे एक टेप खरीदना मत भूलना।
अपने मुंह पर चिपकाने के लिए।

ओह! इसके जाते ही कितनी शांति हो गई।
अब बताओ, ध्रुव! तुम क्या सोचकर इतने परेशान हो?
मैं एक चिड़िया की बात सुनकर परेशान हूं। उसने कहा कि 'शेर आ गए हैं।' इसका क्या मतलब हो सकता है?

'नेशनल फॉरेस्ट' यहां से ज्यादा दूर नहीं है, बेटे! हो सकता है कि कोई शेर भटकता हुआ शहर तक आ गया हो।
लेकिन इसमें चिंता की क्या बात है? यह काम हम पुलिस वालों पर छोड़ दो।

वह चिड़िया एक से ज्यादा शेरों की बात कर रही थी, पापा!
और शेरों का झुंड कभी रास्ता नहीं भटकता।
सच पूछिए तो शेरों का झुंड में चलना ही एक आश्चर्यजनक बात है। खैर! सोचने से कुछ नहीं होगा।

पता नहीं क्यों, लेकिन मुझे किसी भीषण खतरे का आभास हो रहा है।
आई॰ जी॰ राजन खामोश रहे' वे जानते थे कि ध्रुव के आभास कभी गलत नहीं होते हैं।

दूसरी तरफ- शहर में 'ध्रुव-क्रेज' वाकई छूत की तरह फैला हुआ था-
आज तो मजा आ गया, श्वेता!
आज पहली बार हम सब लोग एक ही तरह की ड्रेस पहने हुए हैं।
और वह पोशाक 'स्कूल यूनिफार्म' नहीं है।
करेक्ट!
तेरे भइया की 'कलर-च्वाएस' की तो दाद देनी पड़ेगी।
ये 'दाद-खाज' अपने ही पास रखो। मेरे भइया को इसकी जरूरत नहीं है।
अच्छा, अब अपने-अपने घर जाना है या नहीं?
या यहीं पार्क में सोना है?
अरे बाप रे! बात करते करते सात बज गए। भागो।
मेरी मम्मी ने तो डंडे को तेल पिलाना शुरू कर दिया होगा।
प... पार्क में भी सन्नाटा हो गया है।
कहीं कोई गुंडा-वुंडा मिल गया तो?
तो, मोंटू, इतने सारे ध्रुवों को देखकर वह आत्महत्या कर लेगा।
अरे, देखो!
वह बछड़ा रास्ते में कितने आराम से बैठा हुआ है।
हां! लेकिन इसकी खाल का रंग इतना पीला क्यों लग रहा है?
क्योंकि, यह बछड़ा नहीं है, भोलूराम!
यह शेर है।
श...शेर!
बबर शेर!

आभास पाकर शेर ने एक झटके से अपना सिर घुमाया...
...और पोशाकों का रंग देखते ही उसकी आंखें खूंखार हो उठीं।
वह बच्चों के झुंड की तरफ लपका—
दहाड़
लेकिन अब तक बच्चों ने भागना शुरू कर दिया था।
जिसका जिधर सींग समाया, वह उधर ही भाग खड़ा हुआ।
शेर भी कुछ पलों तक अपनी जगह पर रुका रहा—
क्योंकि उसको यह समझ में नहीं आ रहा था, कि उसका शिकार कौन सा है—
मुझे किसी भी कीमत पर अपने दोस्तों की जान बचानी है। और इसके लिए मुझे शेर का ध्यान अपनी तरफ खींचना होगा।

ओ...ओ ओ।
अब तक बिजली की सी फुर्ती से भाग रहे सारे बच्चे नजरों से ओझल हो चुके थे—
अब शेर के सामने सिर्फ एक शिकार था।
और अब वह भ्रमित नहीं था—
मेरे सारे दोस्त अब सुरक्षित हैं। और मुझे शेरों से निपटना आता है।
गुर्रर्र ईई
श्वेता का हाथ अपनी बेल्ट में छुपे अल्ट्रासोनिक यंत्र पर पड़ा।
और उसमें से निकल कर अल्ट्रासोनिक तरंगें हवा में तैरने लगीं—
हम मनुष्य इन तरंगों को नहीं सुन पाते हैं। ...
...परंतु कोई भी पशु अल्ट्रासोनिक तरंगों को सहन नहीं कर सकता। पर...

... पर शेर तो बढ़ता ही आ रहा है ! यानि... यानि इसपर अल्ट्रासोनिक तरंगों का कोई असर नहीं हुआ?
तो ... श्वेता बिटिया सिचुएशन कहती है कि ...
भागो!

अगले ही पल- श्वेता ने एक तरफ भागना शुरू कर दिया-
दहाड़
लेकिन भूखे शेर से पीछा छुड़ाना आसान नहीं होता है।

इस दृश्य को दो जोड़ी आंखें बड़े गौर से देख रही थीं-
हा हा हा हा! देखा, तबाका!
हमारे पालतू शहर के वातावरण में भी अपनी ट्रेनिंग को नहीं भूले!

लेकिन दूसरी तरफ भी - घटनाएं तेजी से घट रही थीं-
ध्रुव भइया! हफ... हफ ... भइया!
अरे, बंटी, तुम?
क्या हुआ? श्वेता ठीक तो है न ?

श्वे... (हफ)... श्वेता शे... शेर... (हफ) के पास... (हफ हफ) एलफ्रेड पार्क में (हफ) आ ऽऽऽऽ...
अरे, यह तो बेहोश हो गया।
क्या हुआ, ध्रुव ?

बंटी बेहोश हो गया है, मम्मी! तुम इसे संभालो।
मैं अभी आया।
लेकिन सुनो तो ध्रुव ! आखिर...

लेकिन ध्रुव इस समय तक सड़क पर पहुंच चुका था–
शेर के सामने श्वेता !!
वह डरपोक तो शेर को देखते ही बेहोश हो गई होगी।
हे भगवान ! मेरे पहुंचने तक उसको सुरक्षित रखना।
श्वेता को इस समय दुआओं की बहुत सख्त जरूरत थी–
ओह ! सामने तो रास्ता बंद है।
यानि अब मुझे शेर का सामना करना ही पड़ेगा।

श्वेता ने तेजी से इधर-उधर देखा–
अब मुझे सिर्फ एक ही चीज बचा सकती है।
यह लोहे की ग्रिल

ग्रिल उठाकर श्वेता जब तक पलटती...
गर्रर्र
...तब तक मौत छलांग मार चुकी थी।

उसी क्षण श्वेता के दोनों हाथ हवा में उठे...

...और लोहे के दो नुकीले नेजे अपने निशाने पर जा धंसे।

दर्द से दहाड़ते शेर ने अपना भारी पंजा हवा में लहराया...
आ ऽऽ ह
...और श्वेता का बाजू खून से तर-ब तर हो गया।

शेर की चीत्कार से आस-पास का पूरा वातावरण गूंज उठा–
दहाड़
य... यह तो शेर की दहाड़ थी। हे भगवान, श्वेता को तो कुछ नहीं हो गया?

ध्रुव की मोटरसाइकल पार्क से कुछ गज ही दूर थी कि तभी-पागलों की तरह भागता एक अंधा और बदहवास शेर-

-ध्रुव की मोटरसाइकल से पूरे जोर से आ टकराया–
धड़ाम
ध्रुव उछलकर दूर जा गिरा।

अरे, तबाका, यह तो ध्रुव है। ले...लेकिन हमारा शेर भागता हुआ क्यों आ रहा है?
गाड़ी का दरवाजा खोलकर रखो। जल्दी।

उधर- ध्रुव जब तक उठ पाता, भागता हुआ शेर पास की गली में मुड़ कर गायब हो चुका था-

और ध्रुव जब तक उठ कर गली में पहुंचता, तब तक–
शेर गायब हो गया!! लेकिन... एक मिनट!
.. यह दूर जाती वैन की आवाज। हवा में पेट्रोल की महक। अभी-अभी यहां से कोई वैन गई है।

मैं शर्त लगाकर कह सकता हूं कि वह शेर इसी वैन में बैठ कर भागा है। लेकिन वह जाएगा कहां? उसको तो मैं ढूंढ ही लूंगा।
अभी तो मैं देखूं कि श्वेता किस हाल में है?

और पार्क के एक कोने में-
ओहो! वह शेर का बच्चा, भागते-भागते भी एक पंजा मार ही गया।
मुफ्त में आधा लीटर खून का नुकसान हो गया।

तभी–
श्वेता! श्वेता!!
अरे! यह तो भइया की आवाज है! अब तो बढ़िया सा नाटक करना पड़ेगा।
श्वेता! श्वेता!! तू...तू ठीक तो है न? अरे, तू तो डर से कांप रही है।
श..श ...श... शेर! मुझे मारने (सुबक) आया था। मुझे ब..बचालो।
डर मत, डर मत। शेर भाग गया है। चल, घर चलें। आ।
और फिर–
... भागने का रास्ता ही नहीं था। मैं तो डर के मारे हिल भी नहीं पा रही थी।
शेर ने मुझपर छलांग लगाई। लेकिन उसका निशाना चूक गया।

वह मेरे बजाय, बगल में रखी ग्रिलों पर जा गिरा। और फिर, पता नहीं क्यों, वह दहाड़ा और वापस भाग गया।
वह इसलिए, क्योंकि उसकी आंखों में लोहे के नुकीले नेजे घुस गए थे, बहादुर!

लेकिन उसने भागते-भागते तुम्हारे हाथ में पंजा भी मार दिया है। इसीलिए अब दो दिनों तक तुम्हारा घर से निकलना बंद।
ओह! मम्मी!
और इन दो दिनों में तुम सिर्फ आराम करोगी। सिर्फ आराम।

यह बताओ श्वेता कि जिस समय शेर को तुम लोगों ने देखा, उस समय पार्क में और लोग थे या नहीं?
हां, कुछ लोग तो थे, भइया! लेकिन थोड़े से, ज्यादा नहीं।

लेकिन शेर ने उन लोगों पर हमला नहीं किया?
नहीं! हम लोगों को देखने से पहले तो वह गाय की तरह चुपचाप बैठा था।
हुम!

अब मुझे यह मामला थोड़ा-थोड़ा समझ में आ रहा है।

श्वेता की बात ने ध्रुव के दिमाग में खलबली मचा दी–
आश्चर्य की बात है। शेर अवश्य ही पार्क में थोड़ी देर से बैठा होगा।
लेकिन उसने पार्क में बैठे अन्य लोगों पर हमला क्यों नहीं किया?

श्वेता के ग्रुप और अन्य लोगों में ऐसा क्या फर्क था, जो देखकर शेर उत्तेजित हो उठा?
जहां तक मैं समझता हूं, फर्क सिर्फ एक था।... पोशाक का! मेरी पोशाक का।

यानि शेर को मेरी पोशाक पर हमला करने के लिए सधाया गया था। और श्वेता पर हमला इस की जांच का एक अंग था।
इंटरेस्टिंग! अब तो यह सारा मामला व्यक्तिगत हो रहा है। पर कुछ भी हो।

...इस मामले को यहीं खत्म करना बहुत जरूरी है।... वर्ना इस शहर में फैला 'ध्रुव-क्रेज' कई बच्चों के लिए मौत का कारण बन जाएगा।
और इसका कारण एक प्रकार से मैं खुद होऊंगा।

अगले दिन-
इतना तो स्पष्ट है कि जो भी जंगली शेरों को शहर में लाया है, वह शेरों को पूरी तरह से छुपा कर रख रहा होगा।
इसीलिए किसी पशु या पक्षी से मुझे कोई मदद नहीं मिल सकती है।

इसीलिए शेरों की तलाश के लिए कोई नया तरीका अपनाना पड़ेगा। जो आदमी एक से ज्यादा शेरों को यहां लेकर आया होगा...
बकरे का गोश्त
प्रो. अहमद खान
...उसे एक दिन में कम से कम सत्तर किलो गोश्त की जरूरत पड़ती होगी।...
...और वह गोश्त उसे दुकानों से ही मिल सकता है।
आहा! आइए, ध्रुव भाई! आज हमारी याद कैसे आई?
एक जरूरी काम आ पड़ा है, खान भाई!

यह तो मेरी खुशकिस्मती है कि मैं आपके काम आ सकूं।
कहिए, क्या खिदमत करूं?
खान भाई, काम जरा टेढ़ा है।...

मैं शहर की उस गोश्त की दुकान का नाम जानना चाहता हूं, जो एक ही ग्राहक को पिछले दो-तीन दिनों से लगातार सत्तर किलो से ज्यादा गोश्त बेच रहा हो।
अरे, इसमें क्या दिक्कत है। इस शहर का सारा माल एक ही जगह से आता है।..

.. बकर मंडी से। वहां पर चलकर इस बात का पता दो मिनट में लग जाएगा।
अरे, कल्लू! जरा दुकान संभालना! मैं बाहर जा रहा हूं।

हम सीधे मंडी के मुंशी के पास चलेंगे। ध्रुव भाई, उसके पास हर खरीद-बिक्री का रिकॉर्ड रहता है।

और फिर-मुंशी के पास-
रोज सत्तर किलो के ऊपर गोश्त।
मैं समझ गया, साहब कि यह कौन हो सकता है।

कौन हो सकता है, मुंशी जी?
अरे, वही! अपना बन्ने!
हां, साहब, बन्ने ही होगा। क्योंकि पहले तो एक बकरा खरीद कर ले जाता था, तो पूरे चार दिन बाद ही मुंह दिखाता था।

लेकिन इधर दो दिनों से लगातार तीन-तीन बकरे खरीद कर ले जा रहा है, पट्ठा!
यह बन्ने कौन है, खान भाई?
मैं जानता हूं। आइए मेरे साथ।

बन्ने की दुकान, शहर से बाहर जी॰टी॰ रोड पर है। उसके ग्राहकों में गांव वाले ही ज्यादा रहते हैं।
यहां से दाहिने चलिएगा।

और फिर-
हां, साहब! ऊपर वाले की इनायत से बिक्री तो बढ़ गई है।...
बकरे का ताजा गोश्त

आजकल रोज सवेरे, एक गाहक आकर पूरे दो कटे बकरे खरीद कर ले जाता है, और खरे नोट दे जाता है।
वह कौन है? कैसी शक्ल है उसकी?
कहां रहता है वह?

शक्ल तो, साहब, हम नहीं देख पाए। वह अपना चेहरा, न जाने क्यों, ढक कर रखता है।
लबादा भी पहने रहता है, और एक वैन से आता है।
वैन से?

तब तो यह वही आदमी है। वह किधर से आता है?
वह गूदर गांव की तरफ से आता है।
अभी आपके आने से आधा घंटा पहले ही तो आया था।

शुक्रिया, बन्ने जी! आपने मेरी बहुत मदद की है।
खान भाई, आप यहीं मेरा इंतजार कीजिए।
मैं अभी आता हूं।

और फिर- ध्रुव पूर्वी हाई-वे पर गूदर गांव की तरफ बढ़ चला-
वह आदमी जरूर शहर के बाहर ही रुका होगा, ताकि किसी की नजर उसपर न पड़े।

रहने के लिए भी उसने कोई सुनसान जगह ढूंढ़ी होगी, जहां पर दूर-दूर तक और कोई मकान न हो।
जैसे... वह पुरानी हवेली।

हवेली के आसपास उड़ते गिद्ध इस बात को साबित करते हैं कि शेरों की टोली यहां पर हो सकती है।

सुनो, भाई! वह हवेली किसकी है?
वो, साब? वो तो उजाड़ हवेली है। वहां पर... वहां पर...
हां, हां! बोलो, बोलो।

कुछ आ रहा है, तबाका! शायद ध्रुव ही... नहीं। यह तो कोई देहाती है, जो अपनी भैंसों को घर ले जा रहा है।

उसका ख्याल सही था। पास के गांव का दूधवाला अपनी भैंसों को चराने के बाद घर ले जा रहा था–
लेकिन दूरबीन के पीछे बैठी आंखें नहीं देख पाई थीं...
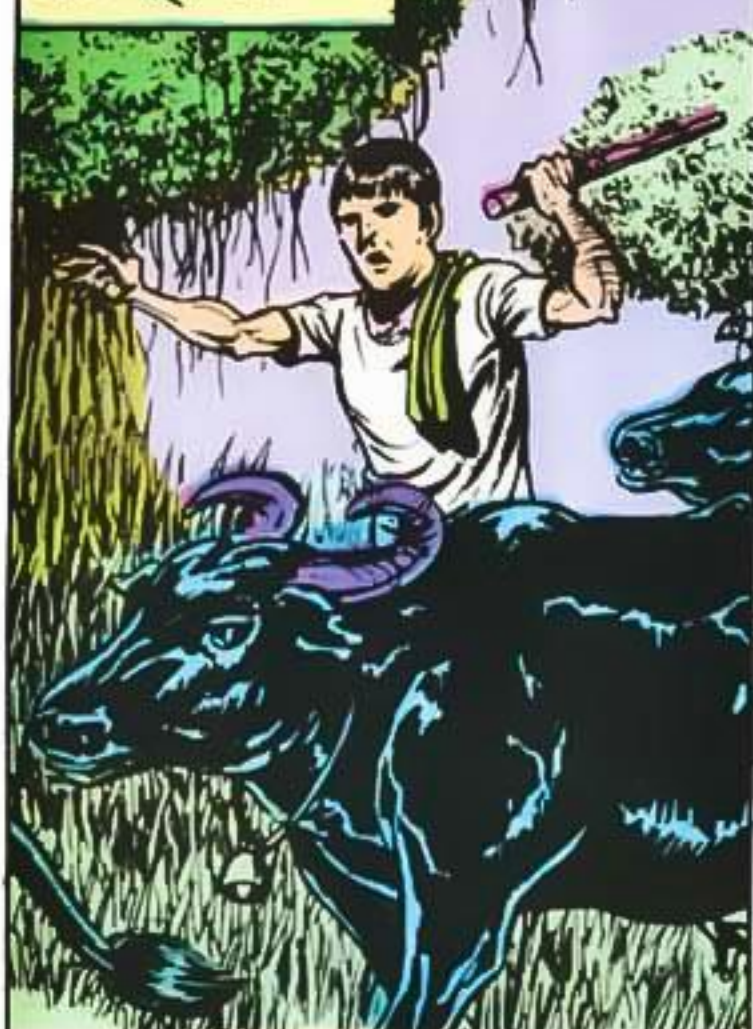
..कि आखिरी भैंस के साथ एक सवारी भी थी–

जैसे ही भैंसें हवेली के पास से गुजरीं, ध्रुव एक तरफ कूदा–

यहां तक तो मैं आराम से आ गया।

अब देखना है कि इस हवेली के अंदर क्या है।
घिरते अंधेरे और परछाइयों के बीच, ध्रुव तेजी से हवेली के पिछवाड़े की तरफ बढ़ा।

अंदर घुसने के लिए पिछवाड़े की खिड़की पहले से खुली हुई है। वाह, किस्मत तेज है।

य... यह तो ग्लोब सर्कस का रिंग है।☆
क्योंकि यह तुम्हारी जिंदगी का आखिरी दृश्य है।
लेकिन ग्लोब सर्कस तो सालों पहले खत्म हो गया था।

☆: पढ़िए 'प्रतिशोध की ज्वाला'

हां! और ग्लोब सर्कस की मौत के जिम्मेदार तुम हो!
मैं!? लेकिन तुम कौन हो ? तुम्हारी आवाज जानी-पहचानी लग रही है।

हाहाहा। बताऊंगा, बताऊंगा। मरने के पहले तुम मेरी सूरत जरूर देखोगे। यह मेरा वादा है।
लेकिन वह बाद में।
नकाबपोश का हाथ एक हैंडल पर कस गया।

और ध्रुव को चारों तरफ से घेरता हुआ एक लोहे का पिंजरा छत से नीचे आ गिरा-

पहचानो, ध्रुव, पहचानो! यह वही पिंजरा है, जिस का इस्तेमाल ग्लोब सर्कस में शेरों का आइटम दिखाने के लिए होता था।
अब इसमें कमी है, तो...
सिर्फ शेरों की।

इससे पहले कि ध्रुव कुछ समझ पाता, पिंजरे के दो तरफ से दो दरवाजे खुले-
दहाड़!
गर्रर्रर्र
और दो भूखे शेर ध्रुव की तरफ बढ़ने लगे।

तुम, जो भी हो, पर शायद यह नहीं जानते कि शेर मेरी बोली समझते हैं, और मैं उनकी बोली।...
...इसीलिए शेरों से निपटना मेरे लिए कोई समस्या नहीं है।

ओह! यह शेर काफी ताकतवर लगता है। एक डार्ट का इसपर ज्यादा असर नहीं हुआ है। पर अब सोचने का वक्त नहीं है।..

...मुझको इस दूसरी और आखिरी डार्ट का इस्तेमाल भी इसी पर करना पड़ेगा।

ध्रुव का हाथ तेजी से घूमा-
और एक दूसरी डार्ट भी लड़-खड़ाते शेर के बदन में जा धंसी।

बेहोशी की दवा की मात्रा दुगुनी होते ही शेर धराशायी हो गया। लेकिन ध्रुव को संभलने के लिए जरा सा भी वक्त नहीं मिला-
दहाड़
क्योंकि दूसरा शेर ध्रुव पर छलांग लगाने ही वाला था-

अब मुझको सिर्फ यह छुरा ही बचा सकता है। लेकिन क्या मैं इसतक अब पहुंच सकता हूं?
ध्रुव ने एक कदम आगे बढ़ाया-

-और अगले ही पल उसे पीछे हट जाना पड़ा-
ओह! अब मैं छुरा नहीं उठा सकता। अब तो मेरे पास सिर्फ एक ही उपाय है! जिसमें जरा सी भी चूक का अर्थ है...

...एक निश्चित मौत!

इससे पहले कि शेर कुछ समझ पाता, ध्रुव उसकी पीठ के ऊपर था, और उसकी उंगलियां शेर की गर्दन पर फौलाद की तरह कसी हुई थीं-
शेर का दम घुटने लगा।

लेकिन ध्रुव के फौलादी हाथ शेर की गर्दन पर कसते ही चले गए।

अब मुझे यह देखना है कि तुम कौन हो?
ध्रुव ने एक ही झटके से नकाब को खींच लिया

और एक भयानक चेहरा रोशनी में चमक उठा –
ध्रुव एक पल में वह क्रूर चेहरा पहचान गया –
जुबिस्को, तुम!!
हा हा हा! पहचान गए।

जुबिस्को, तुम! तुम जिन्दा हो?
हां! लेकिन सिर्फ इसलिए, ताकि मैं तेरी मौत का तमाशा देख सकूं।...
... मैं जानता हूं कि तुम आज तक यही समझ रहे थे कि मुझे शेर ने मार डाला है, पर नहीं।..

...मेरे शरीर का लगभग आधा मांस खाने के बाद उसकी भूख शांत हो गई। लेकिन जैसे ही वह बाहर निकला, उसे करंट लगा और वह बेहोश हो गया...

..मैं जब तक घिसटता हुआ बाहर आता, तब तक करंट खत्म हो चुका था। मैं किसी तरह सड़क के किनारे पहुंचने में कामयाब हो गया ...

..मेरी किस्मत से तभी वहां से एक भला आदमी कार से गुजरा। मेरी हालत पर तरस खा कर उसने मुझे हॉस्पिटल ले जाने के लिए अपनी कार में लाद लिया..

लेकिन रास्ते में मैं बेहोश हो गया। वह भला आदमी यह सोचकर घबरा गया, कि मैं मर गया हूं...
..और इसी घबराहट में वह मुझे 'नेशनल फॉरेस्ट' के बाहर छोड़कर भाग गया...

..जब मुझे होश आया, तो मैं किसी जंगली कबीले के लोगों से घिरा हुआ था। वे मुझे अपने साथ अपने कबीले में ले गए...
?

..उनकी आश्चर्यजनक जड़ी-बूटियों के लेप से मेरे घाव कुछ महीनों में ही भर गए। लेकिन जो मांस शेर खा चुका था, वह वापस नहीं आ सका...
यह मेरा दूसरा जन्म था। शायद तुम्हारे प्रति घृणा ने ही मुझे जिंदा रखा था...

..ठीक होने के बाद मैं कबीला छोड़कर जंगल में और अंदर चला गया। और वहां पर मैंने कबीले वालों की मदद से तीन शेर और... अ... पकड़े...

..अपने सर्कस के अनुभव और कबीले वालों की कुशलता से मैंने उनको तुमपर हमला करने की ट्रेनिंग दी। और जब उन शेरों की ट्रेनिंग पूरी हो गई...
...तो मैं उन सब को लेकर राजनगर चला आया।...

...ताकि मैं तुमको वही मौत दे सकूं, जो तुमने मुझको देने की कोशिश की थी।
और इसमें तुम नाकामयाब रहे।

मुझे तुम्हारे साथ पूरी-पूरी हमदर्दी है, जुबिस्को! लेकिन अब तुमको मेरे साथ पुलिस-स्टेशन चलना पड़ेगा।
क्यों?
क्योंकि पुलिस को अब तक उस व्यक्ति की तलाश है, जिसने 'जुपिटर सर्कस' में आग लगाई थी।

हः! तो तुम यह समझ रहे हो कि मैं अब तुम्हारी बात मानने को मजबूर हूं। लेकिन, बेटे, अभी मैंने अपना 'ट्रम्प' का इक्का तो चला ही नहीं।
तबाका!

दरवाजा टूटने की आवाज सुनकर ध्रुव तेजी से पलटा, और उसकी आंखें फैल गईं—
तड़ाक
उसके सामने एक विशालकाय गुरिल्ला खड़ा था।

घबराओ मत, ध्रुव बेटे! यह गुरिल्ला बहरा नहीं है। तुम चाहो तो इससे बात कर सकते हो।
यह मेरा मजाक उड़ा रहा है, क्योंकि यह जानता है कि मैं गुरिल्लों की भाषा नहीं जानता।

पहला वार मुझे ही करना पड़ेगा। क्योंकि यह तो मुझको एक ही वार में ढेर कर सकता है।
ध्रुव के वार का तबाका पर हल्का सा असर हुआ

लेकिन तबाका के एक वार ने ध्रुव की सारी शंकाओं को सच सिद्ध कर दिया—
आहहऽऽ

धड़ाक

इससे पहले कि ध्रुव संभल पाता—
?

उसका शरीर एक भारी बोझ के नीचे दब गया—
ध्रुव की ताकत हर पल कम होती जा रही थी।

लेकिन उसकी इच्छा-शक्ति बरकरार थी—
ध्रुव ने अपनी बची-खुची ताकत समेटी।

और तबाका उछल कर पीछे जा गिरा—
चियाँऊ

एक गुरिल्ले को सिर्फ ताकत के बूते पर हरा पाना असंभव है।
इसीलिए अब ताकत के साथ-साथ दिमाग का भी इस्तेमाल करना पड़ेगा।

गुस्से से पागल तबाका एक बार फिर ध्रुव की तरफ लपका

लेकिन ध्रुव ऐन वक्त पर तेजी से एक तरफ हटा—

उसका पैर तबाका के पैर में उलझा –
ठक
और तबाका का शरीर रेलिंग पार करता हुआ –

नीचे फर्श पर शेरों के बीच में आ गिरा–
धड़ाम

ध्रुव तेजी से कंट्रोल पेनल की तरफ लपका। उसने कंट्रोल-पेनल का हैंडल दूसरी तरफ खींचा।

और तीनों जानवरों को लोहे के पिंजरे ने अपने घेरे में ले लिया–

अब ध्रुव जुबिस्को की तरफ मुड़ा–
अफसोस, जुबिस्को, कि तुम्हारा 'ट्रम्प का इक्का' तो चिड़ी का जोकर निकला।

लेकिन तुम यह मत समझना बेटे, कि मैं बाजी हार गया।...

...क्योंकि मेरे पास अभी एक हथियार और है।

लेकिन ठीक इसी वक्त - हवेली के एकांत कमरे में रखा पुराना जेनरेटर –

उधर जुबिस्को भी सीढ़ियां लगभग उतर चुका था–

और तभी, लोहे का घेरा खुल गया–
दोनों शेर और गुरिल्ला तबाका भी होश में आ चुके थे।

धुएं और आग के कारण तीनों जानवर क्रोधित और दहशत में थे–
और वे किसी पर भी हमला करने को तैयार थे।

वैसे भी धुएं के कारण कुछ भी देखना असंभव था–

ध्रुव सिर्फ एक चीख सुन पाया–
यह तो जुबिस्को की आवाज लग रही है।
लेकिन आग बढ़ती जा रही है।

अब यहां पर रुकना असंभव है।

तब तक– जब तक पूरी हवेली राख के ढेर में तब्दील नहीं हो गई। आसमान में सुबह की लाली भी धीरे-धीरे फैलने लगी–

लेकिन हवेली से कोई भी बाहर नहीं आया। जुबिस्को को भाग्य ने वही मौत दे दी थी, जो कभी उसने जुपिटर सर्कस को दी थी–